खासी लोक कथाओं में नारी शोषण

मूल : प्रो. स्ट्रीम्लेट ड्खार
अनुवाद : डॉ. जीन एस. ड्खार
संपर्क : jean.dkhar@rediffmail.com

अतीत को जानने के लिए इतिहास के पन्ने पलटना काफी नहीं हैं। सब कुछ दर्ज़ नहीं है इन पन्नों पर, स्त्रियाँ तो बिल्कुल भी नहीं। तब तो और भी नहीं जब स्त्रियाँ आदिवासी हों, जिनका जीवन प्रकृति के मधुर कोलाहल में संगीत की स्वर लहरियों जैसा हो। किसी भी हर्फ़ में इनका कोई बयान दर्ज़ नहीं है। ऐसे में कुछ जानने के लिए जरूरी हो जाता है कि मुख्य सड़क छोड़कर पगडंडी पर निकला जाय और उन पदचिह्नों के कुछ निशान तलाशे जाएं और उस अंजान दास्तां से रू-ब-रू हुआ जा सके जो अभी तक परत-दर-परत तह कर रख दिया गया था समय के किसी तहखाने में।

भारतीय समाज में पितृसत्ता इस कदर हावी है कि स्त्रियों का समूचा जीवन पितृसत्ता के बनाए गए मानकों के इर्द-गिर्द ही घूमता रहता है। लेकिन आदिवासी स्त्रियाँ इस संरचना को तोड़ती हैं। पूर्वोत्तर भारत की स्त्रियाँ ख़ासकर खासी जनजाति की स्त्रियाँ पितृसत्ता के मानकों को नहीं मानती। ये स्त्रियाँ अपने मजबूत इरादे और कठिन परिश्रम के बल पर समाज में विशेष हैं और एक गृहणी के रूप में काफी सशक्त हैं। लेकिन खासी समुदाय और मणिपुर में प्रचलित लोक कथाओं में स्त्रियाँ उतनी सशक्त नहीं हैं जितनी सशक्त वह अभी सामाजिक आर्थिक रूप से दिखती हैं। लोक कथाएं स्त्रियों के शोषण की कहानियाँ कहती हैं।

घर की मुखिया की ज़िम्मेदारी निभाती इन स्त्रियों को वंश की उपाधि से नवाजा जाता है फिर भी समाज में उनका शोषण भी बरक़रार है। वर्तमान में ऐसी बहुत–सी लोककथाएँ प्रचलित हैं जो शोषण को व्यक्त करती हैं। मिसाल के तौर पर 'का साया नोङउम', 'का लिकाई', 'का क्मे ऊ सेर', 'का लेङमाकाव', 'का याव्नाम बाड ऊ ख्ला', 'का ड्ङेम, ऊ न्याङखेड बाड ऊ सोहमिल्लेङ' एवं 'का डेङ रितेंग मिन्नार' जैसी लोक कथाओं में स्त्री शोषण की अभिव्यक्ति को बखूबी देखा जा सकता है।

इन लोक कथाओं में स्त्री को दैहिक और मानसिक रूप से कमज़ोर बताया गया है। ये लोक कथाएं हमें यह बताती हैं स्त्रियों को किस तरह महज एक वस्तु समझा जाता रहा है। किसी की भी गल्तियों की सजा उसे ही भुगतनी पड़ती है, चाहे वह गल्ती उसके बेटे, पति, भाई ने ही क्यों न की हो। 'ऊ मानिक राइतौङ',

'का लाङबिर्खू साङ खिन्डैउ' एवं 'ऊ सेर लापालाङ' जैसी लोक कथाएं हमें यह बताती हैं कि स्त्री शोषण की दास्तां कितनी गहरी है।

'साया नोङउम' लोक कथा में एक सास द्वारा अपनी बहू को राजा महाडेम को बेच देने की कथा है। यह लोक कथा स्त्री को स्त्री की शत्रु के रूप में व्यक्त करती है। इस लोक कथा के विश्लेषण में यह जानना बेहद अहम हो जाता है वह कौन से कारण हैं, कौन-सी विवशता है जिससे एक स्त्री (सास) अपनी बहू को एक राजा को बेच देती है। *मारिङशाङ* की माँ अपनी बहू 'साया' से इतनी घृणा करती है? क्या इसलिए कि वह एक गुलाम है? क्या खासी के वैवाहिक विषय में ऊँच-नीच जैसा विभाजन होता है? वह जिस दाम में बेचीं गई है, वह कौड़ी के दाम है। क्या एक मनुष्य की कीमत कौड़ी है, वह भी केवल इसलिए कि वह एक दासी है और उसका पति घर पर अनुपस्थित था? एक और बात सोचने पर विवश करती है, वह है राजा माहाडेम का चरित्र। ये कुछ ऐसे सवाल हैं जिन्हें लोक कथाओं का विश्लेषण करने के लिए समझना जरूरी है।

स्त्री शोषण पर आधारित एक अन्य कथा 'का लिकाई' है, जिसमें यह बताया गया है कि किस तरह लिकाई नाम की एक स्त्री ने एक बच्ची जना और उसके पति का देहांत हो जाता है। वह लोहा ढोने का काम करती थी और घोर परिश्रम करती थी, एक स्त्री होने के नाते वह सोचती थी कि उसका भार थोड़ा कम होगा और संकटों से मुक्ति मिलेगी। अतः उसने पुनः विवाह करने का निश्चय किया। पुनर्विवाह के पश्चात् ही उसने पाया कि उसका वह पति न केवल आलसी था बल्कि उसकी बेटी से भी काफी घृणा करता था। वीभत्सता की चरम सीमा पर पहुँचकर उस सौतेले पिता ने उसकी बेटी की हत्या करने के उपरांत उसके मांस के टुकड़े करके उसे पकाया और लिकाई ने अनजाने में उसे खा भी लिया। इस कथा से यह विचार उत्पन्न होता है कि छोटी बच्ची का शोषण इस रूप में अमानवीय और कल्पना से परे है। विचार करने की बात यह है कि क्या बच्चों और नाबालिग़ लड़कियों का शोषण एवं उनकी हत्या प्राचीन काल से विद्यमान थी? क्या हमारा समाज प्राचीन काल से से ही स्त्री द्वेषी समाज रहा है? 'का लाङ बिर्खू साङ खिन्डेउ' लोक कथा में भी सौतेले पिता की भूमिका कुछ इसी तरह है। इन कथाओं में सौतेले पिता के क्रूर एवं अमानवीय व्यवहार को दिखाया गया है। लोक में जो कुछ भी है अच्छा एवं सुंदर है, ऐसा नहीं है।

नारी शोषण मात्र शारीरिक अथवा मानसिक अर्थ में ही नहीं होता अपितु वैचारिक रूप में भी होता है। 'ऊ सिम तिंवेङ' नामक कथा में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार नारी की सादगी का लाभ पितृसत्ता उठाता है। इस लोक कथा में पुत्र और माँ के बीच व्यवहार को व्यक्त किया गया है। एक पुत्र अपनी माँ के प्रेम का इस प्रकार लाभ उठाता है कि अंततः वह उसका सौदा कर बैठता है, वह भी मात्र एक दिन के पहनावे के कारण। माँ जो कि अपने पुत्र से अगाध प्रेम रखती थी अपनी भावनाओं अथवा इच्छाओं का परित्याग कर अपने पुत्र के मनमानेपन के आगे घुटने टेक देती है।

डी.टी.लालू के संकलन *'का डङेम, ऊ न्याङखेड बाड ऊ सौह्मिल्लैङ'* कथा में यह बताया गया है कि कैसे भालू और *न्याङखेड* अति घनिष्ठ मित्र थे। *न्याङखेड* केवल इसलिए उससे सामीप्य स्थापित करना चाहता था क्योंकि उसके मन में पहले से ही उसके बच्चों को खा डालने का विचार था। मादा भालू के सगे-संबंधियों ने उसे न्याङखेड से मित्रता के लिए मना किया था। लेकिन भालू उनकी बातों को नजरंदाज किया। न्याङखेड की धूर्तता भरे व्यवहार ने उसे उस पर पूर्णतया विश्वास करने पर विवश कर दिया था। *न्याङखेड* ने यह विश्वास एकक दिन में हासिल नहीं किया था। इसके लिए उसने भालू के गर्भवती होने के समय वह उसके लिए खाना खोजता था और हमेशा उसके साथ-साथ रहता था। भालू जैसे ही बच्चों को जन्म दे देता है, *न्याङखेड* भालू को खाना खोजने को कहता है। चूँकि वह उस पर विश्वास करती है इसलिए वह *न्याङखेड* बात मान खाना खोजने चला जाता है। मादा भालू के भोजन की तलाश हेतु निकलने के उपरांत *न्याङखेड* उसके बच्चों का गला घोंट देता है। यह लोक कथा प्रतीकों के माध्यम से हमें यह बतलाती है कि स्त्री का शोषण विश्वासघाती मित्रों के द्वारा भी होता है।

एक लोक कथा 'राय' नामक लड़की पर आधारित है जो अपने सगे भाई के अत्याचारों की शिकार होती है। *'का डेङ रितेङ मिन्नार'* नामक कथा में *राय* और *कौङवेङ* भाई-बहन होते हैं। *कौङवेङ* बहुत क्रोधी स्वभाव का है, जबकि राय सुशील स्वभाव की सीधी-सादी परिश्रमी एवं फुर्तीली लड़की है। वह अपने माता-पिता, अपने भाई एवं पति का आदर-सम्मान करती है। एक दिन जब वह अपनी सहेलियों के साथ लकड़ी इकट्ठा करने गई थी, तो साथ में अपने भाई के लिए खाना भी लेते गई। जब वह उस स्थान पर पहुँची जहाँ उसका भाई चूहा पकड़ने के लिए मिट्टी खोद रहा था। बहन ने उसकी सहायता करने का सोचा किन्तु उसी समय वह चूहा उसके हाथ से निकल गया। क्रोध में आकर उसका भाई उस पर चिल्लाने लगा। इतना ही नहीं, उसने उसके स्तनों को काटकर घर पर जाकर उसे पकाया और घर के सभी सदस्यों को खिलाया। बेचारी *राय* वेदना और लज्जा के मारे रितेङ मिन्नार नामक एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ गई।

उपर्युक्त कथाओं के विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि नारी का शोषण न केवल उसके पति, उसके पिता, मित्र अथवा भाई के द्वारा होता है अपितु माँ समान सास से भी उन्हें प्रताड़ना भुगतनी पड़ती है जो स्वयं स्त्री है। इन लोक कथाओं का विश्लेषण करने के उपरांत यह स्पष्ट होता है कि स्त्री के लिए शत्रु न केवल पराया व्यक्ति होता है, बल्कि अपना सगा भी शत्रु से कम नहीं होता। यह प्रताड़ना मानसिक और दैहिक रूप से कहीं अधिक है। स्त्री के विरुद्ध ऐसे दुर्व्यवहार से उसका मान-सम्मान और जीवन दाव पर लग जाता है। इस प्रकार खासी लोक कथाओं में दर्शाए गए नारी केंद्रित अत्याचार वर्तमान परिस्थियों से परे नहीं है, यह आज भी प्रासंगिक हैं।

खासी शब्दों और नामों के अर्थ :

1. का साया नोङउम – नाम विशेष
2. का लिकाई – नाम विशेष
3. का क्मे ऊ सेर – हिरण की माँ
4. का लेङमाकाव – नाम विशेष
5. का याव्नाम बाड ऊ ख्ला – याव्नाम नामक लड़की और बाघ
6. का ड्डेम, ऊ न्याङखेड बाड ऊ सोहमिल्लेङ – मादा भालू, जंगली सूअर और आंवला
7. का डेङ रितेंग मिन्नार – वृक्ष विशेष
8. ऊ मानिक राइतौङ – नाम विशेष
9. का लाङबिर्खू साङ खिन्डैउ – पक्षी विशेष
10. ऊ सेर लापालाङ– हिरण / मृगश्रृंग
11. ऊ खोन क्बेइत शापुलोइत - छोटी चिड़िया
12. खोन जिंरेइन किबा मिह् ना का डौह् बाड बाम या का डौह् - मुहावरा जिसका अर्थ है पिस्सू जो मांस से निकलकर मांस को ही काटता / खाता है
13. ऊ सिम तिंवेङ – पक्षी विशेष

(**परिचय :** यह लेख मूलतः खासी भाषा में प्रो. स्ट्रीम्लेट ड्खार द्वारा लिखा गया है जिसका हिंदी अनुवाद डॉ. जीन ड्खार ने किया है। डॉ. जीन ड्खार वर्तमान में लेडी कीन कॉलेज, शिलांग के हिंदी विभाग में सहायक प्राध्यापिका पद पर कार्यरत हैं।)